# कांग्रेस के लिए आत्म मंथन का समय

प्रभात कुमार रॉय

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के वर्तमान कार्यकाल में शासकीय घोटालों ने सारी हदें पार कर दी हैं। कॉमनवेल्थ गेम्स के आयोजन तैयारी में हजारों करोड़ का भ्रष्टाचार सामने आया। मुंबई में आदर्श कोआपेरटिव सोसायटी का एक बेहद संगीन स्कैंडल खुल गया। 2 जी स्पैक्ट्रम कांड के सारे रहस्य अब खुलकर सामने आ गए हैं, जबकि महालेखा नियंत्रक ने इस सरकारी स्कैंडल में दूरसंचार मंत्री ए राजा को बाकायदा दोषी ठहराते हुए, उन पर भ्रष्ट कारगुजारी को अंजाम देने के कारण एक लाख छिहत्तर हजार तीन सौ उनासी करोड़ रुपयों की क्षति पंहुचाने का इल्जाम आयद किया है। यदि भ्रष्टाचार के पुराने सभी रिकार्ड्स की बात की जाए तो 2 जी स्पैक्ट्रम स्कैंडल देश में अब तक घटित हुआ सबसे विशाल धनराशि का घोटाला करार दिया जाएगा। 2 जी स्पैक्ट्रम स्कैंडल के रहस्य उजागर करते हुए सीएजी ने कहा है कि केंद्रीय दूरसंचार मंत्री ने प्राइवेट कंपनियों को लाइसेंस देने में सारे नियमों को ताक पर रख दिया है। उन्होंने सन 2008 में सन 2001 के रेट पर 2 जी स्पैक्ट्रम लाइसेंस बेच डाले। सुप्रीम कोर्ट ने 2 जी स्पैक्ट्रम स्कैंडल केस पर अपनी टिप्पणी करते हुए कहा है कि इतने संगीन इल्जाम का आरोपी ए राजा अभी तक भी आखिर कैसे मंत्री बना हुआ है। 2 जी स्पैक्ट्रम स्कैंडल केस सुप्रीम कोर्ट के समक्ष पेंडिंग है। यह कम हैरानी की बात नहीं हैं कि मनमोहन सरकार राजनीतिक तौर पर अत्यंत अनैतिक आचरण करते हुए एक बेहद भ्रष्ट मंत्री को कैबिनेट से बर्खास्त करने के स्थान पर सुप्रीम कोर्ट में उसका बचाव करती नजर आ रही है। केंद्र सरकार की ओर से सुप्रीम कोर्ट में दाखिल किए गए शपथपत्र में कहा गया कि 2जी स्पैक्ट्रम केस में केंद्रीय मंत्री ए राजा बेगुनाह है। इस मामले में किसी शासकीय नियम का उल्लंघन नहीं किया गया है। मनमोहन सरकार अपने ही एक अत्यंत महत्वपूर्ण विभाग सीएजी (महालेखा नियंत्रक) की रिपोर्ट की अनदेखी करते हुए 2जी स्पैक्ट्रम केस में आखिर किस आधार पर ऐसा झूठा हलफनामा सुप्रीम कोर्ट के समक्ष पेश करने पर आमादा हुई है? दूरसंचार मंत्रालय अपने मंत्री के कारनामों के बारे में सुप्रीम कोर्ट में सफाई पेश कर रहा है कि मंत्री ने वर्ष 1999 में तय किए गए शासकीय कायदे कानूनों के तहत ही सब निर्णय अंजाम दिए हैं और सन 2003 में मंत्रालय द्वारा निर्धारित नीति पहले आओ और पहले लाइसेंस पाओ का पालन किया गया। स्वयं दूरसंचार मंत्री ए राजा का ऑन रिकार्ड कथन है कि उन्होंने 2 जी स्पैक्ट्रम के विक्रय के विषय में समस्त निर्णय प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की पूर्ण सहमति से लिए। अब तो मनमोहन सिंह को ही यह जवाब पेश करना है कि 2जी स्पैक्ट्रम के बारे में लिए गए निर्णय क्या कैबिनेट की बैठक में लिए गए अथवा ये फैसला स्वयं ए राजा द्वारा लिया गया। वैसे भी दूरसंचार मंत्रालय वस्तुतः विगत दीर्घ काल से बेहद विवादों के केंद्र में बना रहा है। सुखराम पर भ्रष्टाचार के इल्जाम आयद हुए और उनके निवास से करोड़ों रुपए बरामद किए गए। उनके पश्चात प्रमोद महाजन ने इसी मंत्रालय को संभालते समय बहुत राजनीतिक बदनामी झेली। ए राजा को कैबिनेट में बनाए रखना प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की राजनीतिक मजबूरी रही है, क्योंकि उनको बर्खास्त करने का अर्थ होता कि डीएमके पार्टी मनमोहन सरकार से अपना समर्थन वापस ले लेती और उनकी सरकार अल्पमत में आ जाती। मनमोहन सिंह के लिए शासकीय नैतिकता से अधिक महत्वपूर्ण सरकार को बनाए रखना है। मनमोहन सिंह को एक ईमानदार समझदार प्रधानमंत्री माना जाता है। उनके कार्यकाल के दौरान जो बड़े सरकारी स्कैंडल सामने आ रहे हैं उनके छींटों से उनका दामन भी बच नहीं सकेगा। एकजुट विपक्ष ने संसद में इस घोटाले पर सरकार की नींद हराम कर दी है। इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जाएगा कि देश के अंदर शासकीय भ्रष्टाचार की शुरुआत उस कांग्रेस पार्टी के शासन काल में ही हुई जो कि महात्मा गांधी की महान नैतिक विरासत की दावेदार थी। कांग्रेस देश की ऐतिहासिक पार्टी है, जो अपनी स्थापना की 125 वीं सालगिरह मना रही है। कांग्रेस ने जंग ए आजादी की कयादत को अंजाम दिया। कांग्रेस नेताओं के लिए यह आत्ममंथन करने का समय है। कांग्रेस पर देश में राजनीतिक नैतिकता और ईमानदारी बनाए रखने की बड़ी जिम्मेदारी है। आम जनमानस का पहले से ही डांवाडोल विश्वास यदि अधिक डोल गया तो यह भारत की प्रजातांत्रिक व्यवस्था के लिए गंभीर क्षति होगी। अतः कांग्रेस के लिए अपनी सरकार को बचाने से कहीं अधिक आवश्यक हो गया है कि वह देश की राजनीतिक व्यवस्था के प्रति टूटते बिखरते यकीन को बचाए। भ्रष्टाचार एक भयावह चुनौती बनकर उभरा है, जिसका यदि डटकर मुकाबला नहीं किया गया तो राष्ट्र का प्रजातांत्रिक ताना बाना विछिन्न हो सकता है।

*(लेखक पूर्व प्रशासनिक*

Reproduced by www.hobbyshobby.com with authors permission